

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, चर्च और अंतिम बातें, सत्र 10, चर्च के अध्यादेश, चर्च की सरकार, चर्च के बारे में मुख्य शिक्षाएँ

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और चर्च के सिद्धांतों और अंतिम बातों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 10 है, चर्च के अध्यादेश, चर्च की सरकार, चर्च के बारे में मुख्य शिक्षाएँ और चर्च की सेवा।

हम चर्च के अध्यादेशों या संस्कारों के बारे में बात करके चर्च के सिद्धांत में अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

यीशु, हमारे प्रभु ने हमें चर्च के रूप में दो अध्यादेश दिए हैं, बपतिस्मा और प्रभु भोज। परमेश्वर हमारी सभी पाँच इंद्रियों की सेवा करता है। वचन हमारे कानों और आँखों को संबोधित करता है, और परमेश्वर बोले गए और लिखे गए वचन को स्पर्श, स्वाद और गंध के साथ पुष्ट करता है।

इस्राएल में वार्षिक उत्सव और बलिदान की व्यवस्था थी। नए नियम में बपतिस्मा और प्रभु भोज के अध्यादेशों या पवित्र चिह्नों या संस्कारों में सुसमाचार को नाटकीय रूप दिया गया है। अध्यादेश शब्द इस बात को रेखांकित करता है कि प्रभु यीशु ने चर्च को दोनों प्रथाओं का पालन करने का आदेश दिया है।

भगवान बपतिस्मा में हमें सुसमाचार का उपदेश देते हैं, प्रेरितों के काम 2:38, और प्रभु भोज, 1 कुरिन्थियों 11:26। बपतिस्मा। जॉन द बैपटिस्ट मसीहा की तैयारी में बपतिस्मा और पश्चात्ताप का उपदेश देते हैं, मार्क 1:4। यीशु और जॉन दोनों ही आने वाली आत्मा के साथ बपतिस्मा की बात करते हैं, और यह वास्तव में पिन्तेकुस्त के दिन आया था, लूका 3:16, प्रेरितों के काम 1:4-5। यीशु बपतिस्मा को शिष्य बनने और शिष्य बनाने के एक भाग के रूप में सिखाते हैं, जिसे हमने मत्ती 28:18-20 में देखा। पॉल सिखाता है कि बपतिस्मा किसी व्यक्ति को मसीह के मरने और जी उठने के साथ पहचानता है, रोमियों 6:3-4। वह सिखाता है कि ईसाई बपतिस्मा उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में मसीह के साथ एकता का प्रतीक है। कुछ चर्च गलत तरीके से मानते हैं कि लोगों को बचाए जाने के लिए बपतिस्मा लेना चाहिए।

यह उन चर्चों के लिए सच है जो शिशु बपतिस्मा सिखाते हैं और कुछ चर्च जो विश्वासियों को बपतिस्मा सिखाते हैं। शिशु बपतिस्मा के लिए रोमन कैथोलिक चर्च और लूथरन चर्च दोनों ही शिशु बपतिस्मा या पुनर्जन्म सिखाते हैं। तथाकथित पुनर्स्थापना आंदोलन के चर्च, जैसे कि चर्च ऑफ क्राइस्ट और क्रिश्चियन चर्च और डिसिपल्स ऑफ क्राइस्ट, अक्सर सिखाते हैं कि उद्धार के लिए विश्वासियों का बपतिस्मा आवश्यक है।

लेकिन पौलुस के मन में, बपतिस्मा के अभ्यास से ज़्यादा सुसमाचार का प्रचार करना प्राथमिकता रखता है। 1 कुरिन्थियों 1:17, मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं बल्कि सुसमाचार का

प्रचार करने के लिए भेजा है। उस संदर्भ में, पौलुस कहता है, मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैंने तुममें से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया।

फिर उसे एक दम्पति की याद आई जिन्हें उसने बपतिस्मा दिया था। मैं समझ नहीं पाता कि पौलुस ने यह कहा हो, "मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैंने तुममें से किसी को भी सुसमाचार का प्रचार नहीं किया।" यह समझ से परे है।

यह असंभव है। क्या मैं यह कह रहा हूँ कि बपतिस्मा महत्वपूर्ण नहीं है? नहीं, मुझे लगता है कि बपतिस्मा महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि यह एक संस्कार है, वास्तव में। लेकिन यह स्वचालित रूप से उद्धार नहीं करता है।

बपतिस्मा के बारे में विचार। चर्चों में ईसाई बपतिस्मा के बारे में अलग-अलग विचार हैं।

हम रोमन कैथोलिक, लूथरन, रिफॉर्म और बैप्टिस्ट विचारों का सर्वेक्षण करेंगे। रोमन कैथोलिक कैथोलिक धर्म उन शिशुओं और वयस्कों को बपतिस्मा देता है जिन्हें बपतिस्मा नहीं दिया गया है। रोमन कैथोलिक चर्च के कैटेचिज़्म के अनुसार, खंड 12.13। यदि आपके पास रोमन कैथोलिक चर्च का कैटेचिज़्म नहीं है, तो आपको इसे प्राप्त करना चाहिए। यह एक सस्ती पेपरबैक है। यह आधिकारिक है। इसमें इम्प्रिमेटर है।

इसे आधिकारिक तौर पर चर्च के सार्वभौमिक शिक्षण साधन के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसका अनुवाद अरबों भाषाओं में किया गया है। यह हर जगह है।

यह आधिकारिक है। यह सरल अंग्रेजी में है। आपको इसकी ज़रूरत है।

आप अपने रोमन कैथोलिक मित्रों को यह समझने में मदद कर सकते हैं कि वे क्या मानते हैं। कैटेचिज़्म, खंड 12.13 के अनुसार, बपतिस्मा के माध्यम से, हम पाप से मुक्त हो जाते हैं और परमेश्वर के पुत्रों के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं। हम मसीह के सदस्य बन जाते हैं, चर्च में शामिल हो जाते हैं, और उसके मिशन में भागीदार बन जाते हैं।

बपतिस्मा शब्द में पानी के माध्यम से पुनर्जन्म का संस्कार है। लूथरन चर्च मिसौरी धर्मसभा की वेबसाइट के अनुसार, LCMS, उद्धारण, लूथरनवाद का मानना है कि बपतिस्मा अनुग्रह का एक चमत्कारी साधन है। दूसरा भगवान का वचन है, जो लिखा या बोला जाता है जिसके माध्यम से भगवान किसी व्यक्ति के दिल में विश्वास का उपहार बनाता है और उसे मजबूत करता है।

हालाँकि हम यह दावा नहीं करते कि हम पूरी तरह से समझते हैं कि यह कैसे होता है, लेकिन हमारा मानना है कि जब एक शिशु का बपतिस्मा होता है, तो परमेश्वर उस शिशु के हृदय में विश्वास पैदा करता है। हम ऐसा इसलिए मानते हैं क्योंकि बाइबल कहती है कि शिशु विश्वास कर सकते हैं। मती 18.6 और यह कि बपतिस्मा में नया जन्म, पुनर्जन्म होता है।

यूहन्ना 3:5-7, तीतुस 3:5-6। लूथरन यह नहीं मानते कि केवल शिशुओं के रूप में बपतिस्मा लेने वाले ही विश्वास प्राप्त करते हैं। ईश्वर के लिखित या बोले गए वचन के माध्यम से पवित्र आत्मा की

शक्ति द्वारा भी किसी व्यक्ति के हृदय में विश्वास पैदा किया जा सकता है। एलसीएमएस का मानना है कि बपतिस्मा बिल्कुल बड़े अक्षरों में नहीं लिखा जाना चाहिए, जो उद्धार के लिए आवश्यक है।

मैं इन बातों पर टिप्पणी किए बिना नहीं जा सकता। मैं रोम से असहमत हूँ कि बपतिस्मा पुनर्जन्म देता है। मैं अपने लूथरन भाइयों और बहनों से असहमत हूँ जो साथी सुधारवादी ईसाइयों के रूप में स्वीकार करते हैं कि शिशुओं में विश्वास होता है।

मैं शिशुओं को बपतिस्मा इसलिए नहीं देता क्योंकि उनमें आस्था होती है या बपतिस्मा से उद्धार होता है। मैं सम्मानपूर्वक असहमत हूँ। सुधारित ईसाई धर्म।

वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ फेथ, अध्याय 28 के अनुसार, बपतिस्मा का सुधारित दृष्टिकोण यह है। बपतिस्मा नए नियम का एक संस्कार है, जिसे यीशु मसीह ने न केवल बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति के दृश्यमान चर्च में प्रवेश के लिए नियुक्त किया है, बल्कि यह उसके लिए अनुग्रह की वाचा, मसीह में उसके शामिल होने, पुनर्जन्म, पापों की क्षमा और यीशु मसीह के माध्यम से ईश्वर को समर्पित होने का संकेत और मुहर भी है, ताकि वह जीवन की नई राह पर चल सके। यह नहीं कहा जा रहा है कि यह बचाता है, बल्कि यह कहा जा रहा है कि यह एक संकेत और मुहर है।

रोमियों 4 से बाइबिल की भाषा। यह संस्कार, मसीह की अपनी नियुक्ति के द्वारा, दुनिया के अंत तक उनके चर्च में जारी रहेगा। न केवल वे लोग जो वास्तव में मसीह में विश्वास और आज्ञाकारिता का दावा करते हैं, बल्कि एक या दोनों विश्वासी माता-पिता के शिशुओं को भी बपतिस्मा दिया जाना चाहिए। हालाँकि इस अध्यादेश की निंदा करना या उसकी उपेक्षा करना एक बड़ा पाप है, लेकिन अनुग्रह और उद्धार इतने अविभाज्य रूप से बंधे हुए नहीं हैं, इससे जुड़े हुए नहीं हैं कि इसके बिना कोई भी व्यक्ति पुनर्जीवित या बचाया नहीं जा सकता है या यह कि बपतिस्मा लेने वाले सभी लोग निस्संदेह पुनर्जीवित होते हैं।

संकेत और मुहर की भाषा रोमियों 4 से आती है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि अब्राहम को खतने का चिन्ह मिला, जो विश्वास से आने वाली धार्मिकता की मुहर है। रोमियों 4:11. संकेत का अर्थ प्रतीक है। यह बैपटिस्ट विचार के बहुत करीब है।

अर्थात्, खतना जाति के प्रसार की जड़ में चमड़ी को काटकर शुद्धिकरण का प्रतीक है। आध्यात्मिक खतना हृदय की शुद्धि है। खतना न केवल एक संकेत था, बल्कि यह एक मुहर भी है।

यह परमेश्वर का वादा है कि वह वही करेगा जो चिन्ह दर्शाता है। नए नियम में कहीं भी स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा गया है, लेकिन यदि खतना पुराने नियम में अनुग्रह का संकेत और मुहर था, तो ईसाई बपतिस्मा और प्रभु भोज नए नियम में परमेश्वर के अनुग्रह के संकेत और मुहर हैं। अर्थात्, ईसाई बपतिस्मा निश्चित रूप से शुद्धिकरण का प्रतीक है।

प्रेरितों के काम 22 में, हनन्याह ने शाऊल से कहा, जो पौलुस बन गया, कि बपतिस्मा ले लो और अपने पापों को धो डालो। क्या वह कह रहा है कि वास्तविक संस्कार इसे पूरा करता है? नहीं,

लेकिन वह कह रहा है कि यह प्रतीक है, यह शुद्धिकरण का संकेत है। प्रभु का भोज निश्चित रूप से मसीह में भागीदारी का संकेत है।

1 कुरिन्थियों 10. क्या वह प्याला जिसे हम आशीर्वाद देते हैं, मसीह के लहू में सहभागिता नहीं है? क्या वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, मसीह के शरीर में सहभागिता नहीं है? बपतिस्मा और प्रभु भोज दोनों ही मुहरें हैं। परमेश्वर वादा करता है कि वह बपतिस्मा का अर्थ पूरा करेगा।

वह वास्तव में उस व्यक्ति को मसीह से जोड़ने और उन्हें शुद्ध करने, उनके पापों को दूर करने, प्रभु के भोज में उनके पापों को क्षमा करने का वादा करता है। जितनी बार आप इस रोटी को खाते हैं और इस प्याले को पीते हैं, आप प्रभु की मृत्यु की घोषणा करते हैं जब तक कि वह नहीं आता। प्रभु के भोज में, परमेश्वर हमें मसीह से जोड़ने या पहले से ही मसीह से जोड़ने का वादा करता है, और वह इसका प्रतीक है, और वह वही करने का वादा करता है जो अध्यादेश दर्शाता है या प्रतीक है।

ईसाई बपतिस्मा के बारे में बैपटिस्ट दृष्टिकोण बैपटिस्ट आस्था और सन्देश 2000, अनुच्छेद 7 में दिया गया है। ईसाई बपतिस्मा एक आस्तिक का पानी में विसर्जन है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर। यह आज्ञाकारिता का एक कार्य है जो क्रूस पर चढ़ाए गए, दफनाए गए और जी उठे उद्धारकर्ता, पाप के लिए आस्तिक की मृत्यु, पुराने जीवन के दफन और मसीह यीशु में जीवन की नईता में चलने के लिए पुनरुत्थान में आस्तिक के विश्वास का प्रतीक है। यह मृतकों के अंतिम पुनरुत्थान में उनके विश्वास की गवाही है।

चर्च अध्यादेश होने के नाते, यह चर्च की सदस्यता और प्रभु के भोज के विशेषाधिकारों के लिए एक शर्त है। एक संक्षिप्त तुलना उचित है। हमारे पास इसके सभी विवरणों में जाने का समय नहीं है, लेकिन रोमन कैथोलिक धर्म और लूथरनवाद का मानना है कि बपतिस्मा लेने वाले लोगों को पुनर्जीवित किया जाता है, जबकि सुधारवादी और बैपटिस्ट चर्च ऐसा नहीं करते हैं।

रोमन कैथोलिक, लूथरन और रिफॉर्म चर्च शिशुओं और वयस्कों को बपतिस्मा देते हैं, जबकि बैपटिस्ट केवल विश्वासियों को बपतिस्मा देते हैं। रोमन कैथोलिक, लूथरन और रिफॉर्म चर्च छिड़काव, उंडेलने या डुबकी द्वारा बपतिस्मा की अनुमति देते हैं, जो शायद ही कभी किया जाता है, जबकि बैपटिस्ट केवल डुबकी द्वारा बपतिस्मा देते हैं। प्रभु भोज।

यीशु ने अपने चर्च को एक और अध्यादेश दिया। प्रभु भोज। लूका 22:19 और 20 उन स्थानों में से हैं, और मत्ती 26, मरकुस 14, लूका 22:1, और कुरिन्थियों 11 उन चार स्थानों में से हैं जहाँ हम प्रभु भोज की संस्था पाते हैं।

जॉन के सुसमाचार में ऐसा नहीं है। प्रभु भोज हमारे लिए यीशु के बलिदान की ओर ध्यान आकर्षित करता है। यह प्रथा पूर्वव्यापी है।

यह क्रूस की ओर देखता है। यह भविष्यसूचक है। यह मसीह की वापसी की प्रतीक्षा करता है और उसके आने तक उसकी मृत्यु की घोषणा करता है।

आने वाली दुनिया में, बपतिस्मा या प्रभु के भोज की कोई ज़रूरत नहीं होगी, हालाँकि हम मेमे के विवाह भोज में भाग लेंगे। प्रकाशितवाक्य 19:9. ऑगस्टीन ने सिखाया कि प्रभु के भोज में, जी उठे मसीह हमारी सभी इंद्रियों को उपदेश देते हैं। यह ऐसा शब्द है जो दृश्यमान है, मानो।

कैल्विन ने ऑगस्टीन का अनुसरण किया। प्रभु के भोज में, हम सुसमाचार को स्पर्श करते हैं क्योंकि हम तत्वों को पकड़ते हैं। यदि आप गुलदस्ते की खुशबू लेते हैं या आपके पास एक अलग कप है, तो इसे इस तरह से करना अच्छा है: दाख की बारी में सुसमाचार या अंगूर।

हम प्रभु के भोज में रोटी और शराब में सुसमाचार का स्वाद लेते हैं। चर्च के मुखिया, भगवान, प्रभु यीशु, अनुग्रहपूर्वक भोज की स्थापना करते हैं; वह सुसमाचार को औपचारिक रूप देते हैं और इसे हमारी सभी इंद्रियों तक पहुँचाते हैं। बेशक, हमारे कान सुसमाचार सुनते हैं क्योंकि संस्था के शब्द पढ़े जाते हैं, और अगर हम बाइबल में देख रहे हैं, तो हमारी आँखें इसे देखती हैं, और हम उन तत्वों को देखते हैं जो मसीह के शरीर और रक्त का प्रतिनिधित्व करते हैं, बेशक।

इसलिए, जैसा कि ऑगस्टीन और कैल्विन ने सिखाया, भोज एक दृश्य शब्द है। यह वास्तव में एक संवेदी शब्द है जो हमारी सभी इंद्रियों को आकर्षित करता है। भगवान का कितना भला है कि यह सिर्फ हमारे कानों को ही आकर्षित नहीं करता।

लूथर ने रोमन कैथोलिक तीर्थयात्राओं और अन्य बातों का विरोध करते हुए कहा कि एक ईसाई व्यक्ति का उचित अंग, उचित अंग उसके पैर नहीं हैं, जैसे कि वह उद्धार पाने के लिए तीर्थयात्रा पर जाता है, वह अपने हाथों को नहीं करेगा जैसे कि उसके पास भगवान को अर्पित करने के लिए कुछ है, उसे स्वीकार करना है। नहीं, एक ईसाई व्यक्ति का उचित अंग, लूथर कहते हैं, उचित अंग उसके कान हैं। वह विश्वास की निष्क्रियता सिखा रहा है।

उद्धार एक ध्वनिक अनुभव है। रोमियों 10:17, विश्वास सुनने से और मसीह के बारे में वचन सुनने से आता है। वह अपनी बात कहते हैं।

प्रभु का भोज हमारी सभी इंद्रियों को आकर्षित करता है। और ईसाई बपतिस्मा भी अधिक इंद्रियों को आकर्षित करता है, क्योंकि पानी एक व्यक्ति पर लगाया जाता है। सुधारकों ने जोर दिया कि भोज की एक शास्त्रीय व्याख्या की आवश्यकता है।

अगर संस्था का कोई शब्द नहीं है, तो कोई भोज नहीं है। पॉल ने जोर दिया कि प्रभु का भोज मसीह के साथ हमारी एकता को दर्शाता है। 1 कुरिन्थियों 10, मैं इसे फिर से गलत नहीं करूँगा, बल्कि इसे सही से पढ़ूँगा।

क्या आशीर्वाद का प्याला जिसे हम आशीर्वाद देते हैं, मसीह के लहू में भागीदारी नहीं है? ये नकारात्मक कथन हैं, जिनमें नकारात्मक कण सकारात्मक उत्तर का संकेत देते हैं। हाँ, है न? हम जो रोटी तोड़ते हैं, वह मसीह के शरीर में भागीदारी है, है न? भोज मसीह के साथ एकता की बात करता है। यह मसीह के साथ एकता नहीं बनाता; यह मसीह के साथ एकता को मजबूत करता है।

यह हमारे आरंभिक विश्वास, यीशु पर विश्वास करने की याद दिलाता है, जिसके द्वारा हम विश्वास संघ के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उसके साथ जुड़ जाते हैं। यह ऊर्ध्वधर संघ है। अगली ही आयत क्षैतिज संघ की बात करती है और कैसे कुरिन्थियों को भोज में उनके दुर्व्यवहार के कारण इसकी आवश्यकता थी, जिसे पॉल ने अगले अध्याय, प्रथम कुरिन्थियों 11 में सही करने का प्रयास किया।

चूँकि एक ही रोटी है, जाहिर है, कोरिंथियन एक आम रोटी का इस्तेमाल करते थे। यह अनुमेय है, लेकिन हमें ऐसा करने की आज्ञा नहीं दी गई है। मुझे लगता है कि एक बड़े चर्च के साथ आपको कई आम रोटियों की आवश्यकता होगी, लेकिन यह आपके पास आएगी, आप एक टुकड़ा तोड़ेंगे और इसे आगे बढ़ा देंगे।

उन्होंने यही किया। क्योंकि रोटी एक है, इसलिए हम जो बहुत हैं, एक शरीर हैं, क्योंकि हम सब एक रोटी खाते हैं। मसीह के साथ एकता सबसे गहराई से बोलती है। प्रभु का भोज मसीह के साथ एकता की सबसे गहराई से बात करता है।

इसके अन्य अर्थ भी हैं, लेकिन यही इसका सबसे गहरा अर्थ है। दूसरे, हमें एक दूसरे के साथ एकजुट होना चाहिए क्योंकि हम सामूहिक रूप से तत्वों में भाग लेते हैं। यह एक सामूहिक संस्कार है जिसे निजी तौर पर नहीं किया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए, हमारे घरों में।

भोज में हमारे विश्वास और प्रेम की आवश्यकता होती है। 1 कुरिन्थियों 11:17-34, परमेश्वर कुरिन्थ के कुछ विश्वासियों को कमजोरी, बीमारी और यहाँ तक कि मृत्यु के साथ देखने आया था। नींद की व्यंजना का प्रयोग किया गया है।

वह उनकी निंदा नहीं कर रहा है। ऐसा करने में, पॉल कहता है, परमेश्वर हमें पिता के समान अनुशासन दे रहा है, यही वह शब्द है जिसका वह उपयोग करता है, ताकि हम संसार द्वारा निंदा न किए जाएँ। कोरिंथियन विश्वासी जो प्रभु के भोज में चर्च की एकता के उल्लंघन के लिए प्रभु द्वारा मारे जा रहे हैं, जब उनके बगल में बैठे व्यक्ति, गरीब व्यक्ति के पास कुछ नहीं था, तब वे अपना बड़ा भोजन लाते हैं, और आगे बढ़कर खाते हैं और दूसरे व्यक्ति का इंतजार नहीं करते।

भगवान ने उन्हें दोषी नहीं ठहराया, लेकिन कम से कम कुछ मामलों में, उसने दूसरों को चेतावनी देने के लिए लोगों की जान ले ली। यह भोजन हमारे पास कई नामों से आया है। इसे यूचरिस्ट या थैंक्सगिविंग कहा जाता है।

संज्ञा यूकेरिस्ट का प्रयोग नहीं किया गया है। यीशु ने धन्यवाद दिया का प्रयोग बार-बार किया गया है। 1 कुरिन्थियों 11:24, धन्यवाद देने के बाद, उसने रोटी तोड़ी और कहा, यह मेरी देह है।

यह एक संगति है, मसीह के साथ एकता का एक उत्साह, जैसा कि हमने पहले कुरिन्थियों 10, 16 में देखा। हम जो रोटी तोड़ते हैं, क्या वह शरीर में भागीदारी नहीं है? हम जो प्याला पीते हैं वह मसीह के खून में भागीदारी नहीं है। सकारात्मक उत्तर अपेक्षित हैं। यह प्रभु की मेज है, एक पर्यायवाची, पहला कुरिन्थियों 10, 21, प्रभु के भोज के लिए जो मेज पर परोसा जाता है।

मेटोनीमी एक अलंकार है जिसमें दो चीजें आपस में बहुत करीब से जुड़ी होती हैं, इसलिए एक दूसरे के लिए खड़ा होता है। अगर आपने समाचार में सुना है, तो आज व्हाइट हाउस से एक संदेश आया है। आप किसी इमारत के बारे में नहीं सोच रहे हैं। आप संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति पद के कार्यालय के बारे में सोच रहे हैं।

यह एक रूपक है। या, अगर आप दूसरे शहरों में हैं तो मुझे माफ़ करें, लेकिन कार्डिनल्स ने आज दो बड़े बल्ले और दो मज़बूत हाथों के लिए सौदा किया, जिसका मतलब है हिटर और पिचर। सिर्फ़ शाब्दिक रूप से नहीं, हाथ और बल्ले।

यह प्रभु का भोज है, मसीह द्वारा स्थापित भोजन जो उनका सम्मान करता है। फसह के भोज को अनुग्रह की वाचा के चिन्ह और मुहर में बदलना, नए नियम में अनुग्रह की वाचा का निरंतर चिन्ह और मुहर। प्रभु का भोज।

प्रभु भोज के बारे में विचार। प्रभु भोज के बारे में चार विचार प्रचलित हैं। रोमन कैथोलिक, लूथरन, ज़िंंगली, रिफ़ॉर्म और ज़िंगलियन।

रोमन कैथोलिक के अनुसार भोज को ट्रांसबस्टैंटिएशन कहा जाता है। रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्र के अनुसार, जब पुजारियों को नियुक्त किया जाता है, तो उन्हें मास के बलिदान में मसीह को अर्पित करने का अधिकार प्राप्त होता है। यही वह काम है जो एक पुजारी करता है।

रोमन कैथोलिक चर्च में मुख्य अधिकारी, एक मंत्री, वचन का उपदेशक नहीं होता। यह एक सुधारवादी विचार है। रोमन कैथोलिक चर्च में मुख्य मंत्री एक पुजारी होता है जो कथित तौर पर मास के बलिदान में मसीह की बलि चढ़ाता है।

कैथोलिक चर्च में यह नहीं कहा गया है कि तीन बजे या ग्यारह बजे सुसमाचार का प्रचार सुनने के लिए आएँ। इसमें कहा गया है कि सामूहिक प्रार्थना का समय हो गया है। मुख्य समारोह यही है।

ऐसा करने वाला व्यक्ति पादरी होता है। उसे विशेष रूप से नियुक्त किया जाता है और उसे मास के बलिदान में मसीह को अर्पित करने के लिए पवित्र शक्ति दी जाती है। रोमन कैथोलिक चर्च सिखाता है कि जब पादरी तत्वों को पवित्र करता है, तो वे चमत्कारिक रूप से मसीह का शरीर और रक्त बन जाते हैं।

उनका बाहरी स्वरूप नहीं बदलता। यह थॉमस एक्विनास का धर्मशास्त्र है जो सार या पदार्थ और दुर्घटनाओं की अस्तुवादी श्रेणियों का उपयोग करता है। दुर्घटनाएँ बाहरी विशेषताएँ हैं।

इस पुलपिट में कुछ दुर्घटनाएँ इसके सटीक आकार, रंग और आकार की हैं। अगर यह छोटा होता, बैंगनी होता या इसे अलग तरह से डिज़ाइन किया जाता तो भी यह एक पुलपिट हो सकता था। उदाहरण के लिए, मैंने खूबसूरत कांच के पुलपिट या प्लास्टिक के पुलपिट देखे हैं।

ऊपर की ओर जाने के लिए आपको ऊपर की ओर चढ़ना होगा, जहाँ आपको कौओं के घोंसले दिखाई देंगे। वे अभी भी पुलपिट हैं, और उन्हें इस रूप में पहचाना जा सकता है क्योंकि उनका

सार या पदार्थ पुलपिट-नेस है। रोम के अनुसार, दुर्घटनाएँ, रोटी और शराब का बाहरी रूप रोटी और शराब ही रहता है, और पदार्थ बदल जाता है।

यह एक ऐसा रूपांतरण है जो चमत्कारिक रूप से घटित होता है। रोटी और शराब का बाहरी रूप नहीं बदलता, बदलता नहीं, बल्कि चमत्कारिक रूप से तत्वों का अदृश्य सार मसीह के शरीर और रक्त में बदल जाता है। पुजारी सामूहिक प्रार्थना में ईश्वर को मसीह का गैर-खूनी बलिदान चढ़ाता है।

लूथर, प्रभु के भोज के मद्देनजर, बलिदान और परिवर्तन के रोमन कैथोलिक विचारों को खारिज कर देता है और इसके बजाय संस्रुति-संश्लेषण को अपनाता है। भोज भगवान के लिए किया जाने वाला पुजारी बलिदान नहीं है, बल्कि एक लाभ है जो वह उपासकों को देता है। लूथर ने कहा, यह उस तरह से जाने वाला बलिदान नहीं है, यह इस तरह से जाने वाला एक लाभकारी है।

ओह, वह पागल था। ओह, मेरे शब्द। लूथरन धर्मशास्त्र के अनुसार, साम्य में, तत्व नहीं बदलते हैं।

इसके बजाय, मसीह एक लैटिन शब्द, लैटिन पूर्वसर्ग, consubstantia के साथ शारीरिक रूप से मौजूद है। Consubstantia। पदार्थ, सार, के साथ।

उसकी उपस्थिति, वह रोटी और शराब के तत्वों में, उनके साथ और उनके नीचे शारीरिक रूप से मौजूद है। हाँ। यह जटिल हो जाता है, लेकिन इसके पीछे एक निश्चित क्राइस्टोलॉजी है।

लूथरन मानते हैं कि उनके पुनरुत्थान में, सर्वव्यापकता का दिव्य गुण अलौकिक रूप से मसीह के ईश्वरत्व से उनकी मानवता में स्थानांतरित हो गया था। यह एक यूचरिस्टिक प्रेरणा है। यह उनके शरीर को हर जगह मौजूद होने में सक्षम बनाता है, जिसमें साम्य के तत्व भी शामिल हैं।

लड़के, सम्मानपूर्वक, मैं असहमत हूँ। इसमें न तो कोई परिवर्तन है और न ही कोई संसर्ग। मसीह का शरीर स्वर्ग में पिता के दाहिने हाथ पर है।

पवित्र आत्मा मसीह के कार्य का लाभ लेता है और उन्हें सामूहिक प्रार्थना में विश्वास करने वाले प्रतिभागियों तक पहुँचाता है, जैसा कि वह परमेश्वर के वचन के प्रचार में करता है। संस्कार दृश्य शब्द हैं। महिमावान मसीह और विश्वास करने वाले प्रतिभागियों के बीच का संबंध पवित्र आत्मा है।

प्रभु भोज के बारे में सुधारवादी दृष्टिकोण रोमन कैथोलिक और लूथरन दोनों दृष्टिकोणों से अलग है। इसे कभी-कभी मसीह की वास्तविक उपस्थिति का सिद्धांत कहा जाता है। यह ट्रांसबस्रुति-संश्लेषण और कॉन्सबस्रुति-संश्लेषण दोनों को अस्वीकार करता है।

तत्व नहीं बदलते, और मसीह का शरीर स्वर्ग में है। उसके मानवीय स्वभाव में दैवीय गुण नहीं डाले गए हैं, और निश्चित रूप से इसके विपरीत भी नहीं। शुक्र है कि लूथरनवाद ऐसा नहीं सिखाता।



गुणों का यह संचार केवल एक ही दिशा में क्यों जाता है? इसके बजाय, सुधारवादी दृष्टिकोण यह मानता है कि मसीह भोज में मौजूद होता है जब पवित्र आत्मा पिता के दाहिने हाथ पर अपने स्थान से पुनर्जीवित मसीह के लाभों को विश्वास करने वाले प्रतिभागियों को भोज में लाता है। भोज के बारे में ज़िंगलियन दृष्टिकोण अन्य तीन दृष्टिकोणों से अलग है। हालाँकि यह बहस का विषय है कि क्या यह वास्तव में उलरिच ज़िंगली का दृष्टिकोण था, यह उनके नाम से जुड़ा हुआ है।

इसे स्मारक दृश्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह चर्च द्वारा मसीह की मृत्यु को याद करने पर जोर देता है। भोज एक स्मरणोत्सव है जो मसीह की मृत्यु और हमारे पापों को दूर करने में उसकी प्रभावशीलता को ध्यान में लाता है। अन्य दृष्टिकोणों से अलग, यह मानता है कि मसीह भोज में किसी विशिष्ट या अलौकिक तरीके से मौजूद नहीं है।

हम भोज के विचारों से भोज के धर्मशास्त्र की ओर बढ़ते हैं। हम फिर से वही चार दृष्टिकोण दोहराएँगे। वास्तव में, यह सच नहीं है।

हम आगे बढ़ते हुए उनका ज़िक्र करेंगे, लेकिन हम दूसरे मुद्दे भी उठाएँगे। हम धार्मिक मुद्दे भी उठाएँगे। प्रभु भोज का धर्मशास्त्र।

सबसे पहले, प्रभु भोज यीशु के आदेशों का पालन करता है। यह एक अध्यादेश है। चर्च प्रभु भोज का पालन उसी कारण से करता है जिस कारण से वह ईसाई बपतिस्मा का अभ्यास करता है।

यीशु ने अपने शिष्यों को ऐसा करने का आदेश दिया। मैथ्यू सुसमाचार का प्रतिनिधि है। जब वे खा रहे थे, यीशु ने रोटी ली, उसे आशीर्वाद दिया, और कहा, लो, खाओ।

लो और खाओ। यह मेरा शरीर है। यह एक आदेश है।

खाने के बाद मैंने उसे प्याला दिया। तुम सब लोग इसमें से प्याला पियो। खाना-पीना आज्ञाएँ हैं, विकल्प नहीं, हमारी पसंद नहीं, प्रेरितों का विचार नहीं, यीशु का विचार नहीं।

दूसरा, प्रभु अपनी मृत्यु को याद करते हैं। यह एक स्मारक है। जिस रात उन्हें धोखा दिया गया था, हम प्रभु भोज के दौरान अक्सर यह सुनते हैं।

मुझे नहीं पता कि हम सिर्फ 1 कुरिन्थियों 11 से ही क्यों पढ़ते हैं। मैं चाहता हूँ कि हम संस्था के चारों शब्दों को बारी-बारी से पढ़ें, लेकिन यह ठीक है। जिस रात उसे धोखा दिया गया, उस रात यीशु ने रोटी खाई।

जब उसने धन्यवाद किया, तो उसे तोड़ा और कहा, “यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है। मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।” उसने प्याले के विषय में कहा, “यह प्याला मेरे लोहू में नई वाचा है।”

इसे जितनी बार भी पियें, मेरी याद में पियें। यह एक स्मारक है। यह एक इतिहास का पाठ है जिसे हम याद करते हैं, हालाँकि यह भी बाइबल की दृष्टि से उन शब्दों से ज़्यादा मज़बूत है जो मैं आपको पढ़कर सुना रहा हूँ।

याद रखना सिर्फ़ मन में सोचना और अभ्यास करना नहीं है। यह जीवित प्रभु की आराधना करना है जो पवित्र भोज में अपने लोगों के साथ मौजूद है। तीसरा, प्रभु का भोज यीशु के बलिदान को स्पष्ट करता है।

यह वाचा-संबंधी है। यीशु की मृत्यु नई वाचा का बलिदान है, जैसा कि यीशु और पौलुस दोनों कहते हैं। यह कलीसिया के लिए है, कलीसिया द्वारा मनाया जाता है, विश्वासियों द्वारा लिया जाता है।

यीशु अपने चर्च से प्यार करते हैं और उसके लिए खुद को दे देते हैं। प्रभु के भोज में, वह हमें याद दिलाता है कि जितनी बार हम भोज में हिस्सा लेते हैं, हम यह संदेश देते हैं कि यीशु हमें अपने लोगों के रूप में बचाता है, रखता है और प्रेरित करता है। चौथा, प्रभु का भोज यीशु के चर्च को एकजुट करता है।

यह सामुदायिक है। यह मसीह के उद्धार कार्य का जश्न मनाता है और मसीह के साथ हमारे मिलन को रेखांकित करता है, मसीह के साथ हमारे मिलन को रेखांकित करता है, और यीशु के समुदाय के रूप में एक दूसरे के साथ एकता को रेखांकित करता है। हम सभी एक ही रोटी खाते हैं।

इसलिए हम जो बहुत हैं, सब एक शरीर हैं। 1 कुरिन्थियों 10:17. यह हमें एक दूसरे से प्रेम करने, एक दूसरे के प्रति सम्मान दिखाने और एक दूसरे को शामिल करने के लिए कहता है, जैसा कि कुरिन्थियों ने अपने प्रेम भोज में किया था, मुझे यह पहले ही कहना चाहिए था।

फिर से, यह एक विकल्प है लेकिन नए नियम में इसकी आज्ञा नहीं दी गई है। प्रेम भोज एक चर्च भोज था जिसमें लोग प्रभु के भोज की पूजा करते थे। लोग एक साथ चर्च भोज करते थे, जिसे अगापे कहते थे, जिसे प्रेम भोज कहा जाता था, और वे ईसाई संगति का आनंद लेते थे।

ऐसा लगता है कि कोरिंथियन, वास्तव में, प्रेम भोज में प्रभु भोज मना रहे थे, लेकिन वे गरीबों की अनदेखी करने और गरीबों के साथ भोजन साझा न करने की अपनी अशिष्टता से अगापे के अर्थ को भी नकार रहे थे। भोजन साझा न करना और साथ में न खाना। पाँचवाँ, प्रभु भोज यीशु के सुसमाचार को प्रसारित करता है।

यह मिशनरी है। जितनी बार आप यह रोटी खाते हैं और इस प्याले को पीते हैं, आप प्रभु की मृत्यु की घोषणा करते हैं। 1 कुरिन्थियों 11:26.

प्रभु भोज एक धर्मोपदेश है। यह सुसमाचार का प्रचार करता है। छठा, प्रभु भोज यीशु के प्रावधान का जश्न मनाता है।

यह एक भागीदारी है। हम प्रभु यीशु में भाग लेते हैं। हम अपने पाप के अलावा कुछ भी नहीं लाते हैं।

हम आते हैं और ग्रहण करते हैं। मसीह के उद्धारक कार्य में ग्रहण करें। परमेश्वर का उदार अनुग्रह ग्रहण करें, जो यीशु में विश्वास करने वाले पापियों को स्वीकार करता है।

प्रभु भोज कोई बलिदान नहीं है। यह अनुग्रह का एक साधन है, वचन का प्रचार, ईसाई बपतिस्मा और प्रार्थना के साथ। इसका मतलब है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को अनुग्रह देने के लिए एक व्यवस्था की है।

इनमें से कोई भी चीज़ अपने आप अनुग्रह नहीं देती, लेकिन ये वे साधन हैं जिनका उपयोग परमेश्वर अपने लोगों को बचाने और उन्हें मज़बूत करने के लिए करता है। यीशु ने अपना बलिदान पहले ही पूरा कर लिया है। प्रभु का भोज परमेश्वर के अपने लोगों के लिए किए गए प्रावधान की गवाही देता है।

अनुग्रह पर अनुग्रह। और भोज में हम भाग लेते हैं। हमें परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त होता है।

सातवाँ, प्रभु भोज यीशु की वापसी की भविष्यवाणी करता है। यह भविष्य की ओर देखता है।

क्योंकि यीशु ने इसकी स्थापना के समय प्रतिज्ञा की थी, कि मैं दाख का रस उस दिन तक कभी न पीऊँगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊँ। मत्ती 26:29 . पौलुस भोज को मसीह के दूसरे आगमन से जोड़ता है।

रोटी खाना और प्याला पीना प्रभु की मृत्यु की घोषणा है जब तक कि वह न आए। 1 कुरिन्थियों 11:26. अंत में, बिलकुल भी अंत में नहीं।

इसके बाद, प्रभु भोज में प्रभु की वापसी की भविष्यवाणी की जाती है। ऐसा लगता है कि अंत में, अंतिम से पहले, हम चर्च की सरकार पर विचार करते हैं। हम चर्च की सेवकाई पर भी विचार करना चाहते हैं।

चर्च सरकार के बारे में ईसाइयों में काफी भिन्नता है, लेकिन वे कई सामान्य विशेषताओं में विश्वास करते हैं। समानताओं की खोज करने से पहले, हम विभिन्न प्रकार की चर्च सरकार का सारांश देंगे। रोमन कैथोलिक चर्च पोप, रोम के बिशप के अधीन एक विश्वव्यापी पदानुक्रम है, जो वेटिकन सिटी में स्थित है।

कैथोलिक धर्म चर्च के अंतिम अधिकार को पीटर में मानता है, जिसे वे पृथ्वी पर मसीह का पहला पोप या प्रतिनिधि मानते हैं। रोम में चर्च से प्रेरित उत्तराधिकार के माध्यम से अधिकार प्रेषित किया जाता है। रोमन कैथोलिक शिक्षा में पुरोहितवाद शामिल है, जो मानता है कि पापों को क्षमा करने की शक्ति पोप से बिशप को हाथ रखने के द्वारा दी जाती है।

बिशप के पास बहुत अधिक अधिकार होते हैं और वे उन पुजारियों और उपयाजकों पर शासन करते हैं जो उनकी सहायता करते हैं। रोमन कैथोलिक चर्च की ताकत स्थानीय पैरिशों में सेवा करने वाले उसके पुजारियों में निहित है। यह सब रोमन कैथोलिक स्रोतों और धर्मशास्त्र के अनुसार है।

एपिस्कोपल सरकार वाले चर्च बिशप द्वारा शासित होते हैं, जिनके पास चर्च का अधिकार होता है। कोई कह सकता है कि रोम एपिस्कोपल है, लेकिन यह पोपल भी है, इसलिए हम इस तरह से अंतर करते हैं। एपिस्कोपल एंग्लिकन चर्च में बिशप उच्च-श्रेणी के बिशप के अधीन हो सकते हैं, जिन्हें आर्कबिशप, मेट्रोपोलिटन या पैट्रिआर्क कहा जाता है।

वे धर्मसभाओं में भी मिलते हैं। एपिस्कोपल चर्च की सरकार एक सरल आदेश श्रृंखला नहीं है, और कुछ अधिकार आम चर्च परिषदों में निहित हैं। लेकिन संक्षेप में, रोमन कैथोलिक चर्च बिशपों द्वारा शासित होता है।

प्रेसबिटेरियन चर्च सरकार प्रतिनिधि है, जो परिषदों के पदानुक्रम में अधिकार रखती है। सबसे निचला स्तर जिसे सत्र या कंसिस्टरी कहा जाता है, स्थानीय चर्च को संचालित करने वाले बुजुर्गों से बना होता है। चर्च का मंत्री या शिक्षण बुजुर्ग, सत्र का सदस्य होता है और उसकी अध्यक्षता करता है।

मण्डली आम प्रतिनिधियों और शासक बुजुर्गों का चुनाव करती है। सत्र बुजुर्गों को परिषद के अगले स्तर पर भेजता है, जिसे प्रेस्बिटेरियन द्वारा प्रेस्बिटेरी या रिफॉर्म द्वारा क्लासस कहा जाता है। सर्वोच्च परिषद जनरल असेंबली या धर्मसभा है, जो क्रमशः प्रेस्बिटेरियन और रिफॉर्म है, जिसमें प्रत्येक प्रेस्बिटेरी प्रतिनिधि भेजती है।

मण्डली चर्च सरकार मण्डली में अधिकार स्थापित करती है। स्थानीय मण्डली खुद शासन करती है और अपने नेताओं का चुनाव करती है। ये चर्च पादरी के नेतृत्व वाले, कर्मचारियों के नेतृत्व वाले, एल्डर के नेतृत्व वाले या अन्यथा हो सकते हैं, लेकिन प्रत्येक मामले में, मण्डली के पास अंतिम अधिकार रहता है।

स्थानीय चर्च पूरी तरह से स्वतंत्र हो सकते हैं या किसी संप्रदाय से संबंधित हो सकते हैं। यदि उत्तरार्द्ध है, तो न तो मण्डली और न ही संघ एक दूसरे पर कोई नियंत्रण रखते हैं, सिवाय संघ में सदस्यता समाप्त करने की क्षमता के। संघ या सम्मेलन समान विचारधारा वाले चर्चों के संबंधपरक और वित्तीय नेटवर्क हैं जो आमतौर पर चर्च के स्वास्थ्य, मिशन और धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मौजूद होते हैं।

पारंपरिक रूप से मण्डली चर्च सरकार का अभ्यास करने वाले चर्चों में बैप्टिस्ट, कांग्रेसनलिस्ट और गैर-संप्रदायिक ईसाई धर्म के कई रूप शामिल हैं। हमने कहा कि चर्च सरकार के रूप विशिष्ट हैं, और यह सच है। हमने यह भी कहा कि उनमें कुछ चीजें समान हैं।

मैं बस संक्षेप में उनका सारांश देना चाहता हूँ। उनमें कुछ समानताएँ हैं। यानी हमने अंतरों पर जोर दिया है।

हम चर्च की मूल शिक्षाओं को भी संप्रेषित करना चाहते हैं। यह ठीक काम करता है। तो, रोमन कैथोलिक, एपिस्कोपल, प्रेस्बिटेरियन और कांग्रेसनल सरकार के ऐसे रूप हैं जो अलग-अलग हैं, लेकिन उनमें कुछ चीजें समान हैं।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मसीह चर्च का मुखिया है। मत्ती 16, 18 और 19, इफिसियों 5:25-28। इस प्रकार, उसके पास पूरे चर्च और स्थानीय मण्डलियों पर सर्वोच्च अधिकार है।

मैं यहाँ भोलापन नहीं दिखा रहा हूँ। बेशक, चर्च सरकार के जिन चार रूपों के बारे में हमने बात की है, उनमें इसे अलग-अलग तरीकों से समझा जाता है। फिर भी, कुछ समानताओं की ओर इशारा करना अच्छा है।

दूसरा, बाइबल चर्च पर अधिकार रखती है। यह निश्चित रूप से एक सुसमाचारीय मूल्यांकन है। गलातियों 1, 8-9 देखें।

तीसरा, यह मुख्य शिक्षाओं का एक सुसमाचारी सारांश है। मैं जितना संभव हो सके उतना दयालु हूँ। तीसरा, मसीह चर्च के नेतृत्व के माध्यम से अपना अधिकार व्यक्त करता है।

मत्ती 18:15-20, प्रेरितों के काम 6:3. चौथा, चर्च के दो पद हैं। पहला पादरी, एल्डर और बिशप है।

पादरी शब्द का अर्थ है देखभाल और पालन-पोषण करना। 1 पतरस 5:1-4. एल्डर का अर्थ है परिपक्वता और बुद्धिमता।

तीतुस 1:5-9. बिशप या ओवरसियर नेतृत्व और प्रशासनिक योग्यता को दर्शाता है। पहला तीमुथियुस 3:1-7.

एक योग्य पादरी एक ऐसा मसीही होता है जिसका चरित्र अच्छा होता है, जो अपने परिवार का अच्छी तरह से नेतृत्व करता है, समुदाय में उसकी अच्छी प्रतिष्ठा होती है, और जो कलीसिया को सिखाने में सक्षम होता है। 1 तीमुथियुस 3:1-7. तीतुस 1:5-9.

यह बुद्धि, दूसरों के लिए प्रेम, नम्रता और आत्म-संयम से भी चिह्नित है। याकूब 3:1-18। पादरी एल्डर्स हैं, पादरी या एल्डर्स हैं, और वे चर्च की रखवाली करते हैं।

1 पतरस 5:2. कलीसिया का नेतृत्व करें। 1 तीमुथियुस 3:5. वचन सिखाएँ। 1 तीमुथियुस 3:2. गलतियों का विरोध करें। तीतुस 1:9. कलीसिया के सदस्यों के लिए प्रार्थना करें। याकूब 5:13-15.

और दूसरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण स्थापित करें। 1 पतरस 5:3. दूसरा पद डीकन का है, फिलिप्पियों 1:1.

डीकन की मुख्य ज़िम्मेदारियाँ चर्च की सेवा से संबंधित हैं। डीकन के लिए योग्यताएँ, 1 तीमुथियुस 3:8-13, पादरी के लिए योग्यताओं के समान हैं, लेकिन उन्हें पढ़ाने में सक्षम होने की आवश्यकता नहीं है। पाँचवाँ, आध्यात्मिक रूप से प्रतिभाशाली मण्डली स्वयं चर्च की सेवकाई को पूरा करने के लिए केंद्रीय हैं।

पादरी और अन्य नेता शिक्षा देते हैं और नेतृत्व करते हैं, लेकिन मण्डली के सभी सदस्य ज़िम्मेदारियाँ उठाते हैं और मंत्री भी होते हैं। वे सेवक हैं। इफिसियों 4:12-16.

वे प्रभु, चर्च और दूसरों की सेवा करने के लिए अपने विविध उपहारों का सक्रिय रूप से उपयोग करते हैं। हम सभी के पास आध्यात्मिक उपहार हैं। हमें उनका उपयोग मसीह के शरीर को मजबूत करने के लिए करना चाहिए।

हम प्राप्त करते हैं, और हम देते हैं और प्राप्त करते हैं; दूसरे देते हैं और प्राप्त करते हैं। इन सबमें और इनके माध्यम से, लक्ष्य यह है कि परमेश्वर की महिमा हो क्योंकि वह उपहार देने वाला है, उपहारों को सशक्त बनाने वाला है, और चर्च के बढ़ते स्वास्थ्य के माध्यम से उसकी प्रशंसा की जा रही है। अंत में, चर्च के जीवन में निर्णयों को चर्च के मिशन, इसकी एकता, पवित्रता, सत्य और प्रेम को प्रतिबिंबित करना चाहिए, और यह चर्च की प्रकृति, इसकी एकता, पवित्रता, सत्य और प्रेम और इसके मिशन को प्रतिबिंबित करना चाहिए, जिस मिशन को हम अब चर्च के सिद्धांत के अपने अध्ययन को समाप्त करने के लिए देखते हैं।

चर्च की सेवा या मिशन में आराधना, सुसमाचार प्रचार, निर्माण और डायकॉनल मंत्रालय शामिल हैं। चर्च की सेवा में आराधना शामिल है। 1 पतरस 2, 9-11, हम जो लोग नहीं हैं, अब परमेश्वर के लोग कहलाए गए हैं, कि हम उसकी महानता का बखान करें जिसने हमें अंधकार से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है।

रोमियों 15 में, पौलुस खुद को याजकीय शब्दों में परमेश्वर के लिए एक भेंट के रूप में देखता है, अन्यजातियों; यह उसके बलिदान के रूप में एक बहुत ही सुंदर रूपक है। यह वास्तव में सुंदर है। 15:5, यह गलत है, रोमियों का 15:15।

परमेश्वर ने मुझे परमेश्वर के सुसमाचार की पुरोहिती सेवा में अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का सेवक बनने का अनुग्रह दिया ताकि अन्यजातियों की भेंट पवित्र आत्मा द्वारा स्वीकार्य और पवित्र हो सके। यह कैसे होगा? वह एक प्रचारक है, और उसका लक्ष्य परमेश्वर की आराधना करना है। मैं कहूँगा कि चर्च की सभी सेवाओं का सर्वोच्च लक्ष्य वास्तव में परमेश्वर की आराधना है।

क्या हम पापियों तक पहुँचने की कोशिश नहीं कर रहे हैं? हाँ, हम कर रहे हैं। और क्या हमें उनके उद्धार की परवाह नहीं है? हाँ, हम करते हैं। लेकिन जॉन पाइपर सही हैं।

हम ऐसा इसलिए करते हैं ताकि परमेश्वर के और भी ज़्यादा उपासक हो सकें। यही हमारा अंतिम लक्ष्य है। चर्च की सेवा में आराधना भी शामिल है।

इसमें प्रार्थना और चर्च के अध्यादेशों या संस्कारों का पालन शामिल है। दूसरे, चर्च की सेवा में सुसमाचार प्रचार शामिल है। हम इसे यूहन्ना 20 में देखते हैं जब पतरस को यीशु के साथ एक निजी मुलाकात मिलती है और वह यीशु से बात करने के लिए दूसरों से पहले नाव से बाहर निकल जाता है।

यीशु पतरस को पुनःस्थापित करते हैं, जिसे तीन बार अस्वीकार किया गया था। तीन बार, यीशु ने उससे कबूल करवाया कि वह यीशु से प्रेम करता है। यह एक कठिन पश्चाताप है, लेकिन एक अच्छा और ज़रूरी पश्चाताप है।

और पतरस ने सचमुच पश्चाताप किया। और यीशु ने उसे एक मिशन दिया। मेरी भेड़ों को खिलाओ, मेरे मेमनों की देखभाल करो।

वह यह कैसे करेगा? परमेश्वर के वचन की सेवकाई के माध्यम से, बिना उद्धार पाए हुए लोगों तक पहुँचना। और उस सेवकाई के माध्यम से शिष्यत्व भी शामिल है। मैं वास्तव में था; मैं वास्तव में यूहन्ना 21 में था, और यह सच है।

हालाँकि, यूहन्ना 20 में, अंत में, यीशु स्पष्ट रूप से 11 को भेजता है, यहूदा अपने स्वामी को धोखा देने के लिए चला गया, यीशु ने अपने स्वामी को धोखा दिया। पुनर्जीवित प्रभु कहते हैं, जैसे पिता ने मुझे भेजा है, मैं तुम्हें भेज रहा हूँ यूहन्ना 20:21। जब उसने यह कहा, तो उसने उन पर साँस फूँकी।

यह आदम में साँस लेने में दिव्यता को याद करना है, जिससे वह जीवित हो गया। यहाँ, यीशु उन पर साँस लेता है और कहता है, पवित्र आत्मा को ग्रहण करो। यदि आप किसी के पापों को क्षमा करते हैं, तो वे क्षमा किए जाते हैं।

यदि आप क्षमा नहीं करते हैं, तो यह रोक दी गई है। यह, निश्चित रूप से, उन्हें भेजने और उन्हें वह आत्मा प्रदान करने के साथ जुड़ा हुआ है, जिसके द्वारा उन्हें बचाए न गए लोगों के साथ सुसमाचार साझा करना है। और यह उन आयतों में भी परिलक्षित होता है जिन्हें हम रोमियों 15 में पढ़ते हैं।

पौलुस की सेवकाई का उद्देश्य गैर-यहूदियों को सुसमाचार का प्रचार करना है ताकि वह उन्हें परमेश्वर को भेंट के रूप में प्रस्तुत कर सके। चर्च की सेवा में सुसमाचार प्रचार शामिल है। इसमें परमेश्वर को सम्मान देने वाले सभी प्रकार के प्रचार शामिल हैं।

जैसा कि हमने पहले देखा, सुसमाचार प्रचार का उल्लेख मत्ती 28, 19 से 20 के महान आदेश में भी किया गया था। इस सेवा में ईश्वर को सम्मान देने वाले सभी प्रकार के प्रचार शामिल हैं। यह सब ईश्वर की सेवा है।

आराधना, सुसमाचार प्रचार, शिक्षा। मुझे पॉल और पीटर दोनों का इसे कहने का तरीका बहुत पसंद है। ईश्वर आध्यात्मिक उपहार देने वाला है।

वे उसके उपहार हैं। वह उन्हें हमें देता है और ऐसा लगता है कि वे हमारे उपहार बन गए हैं। हम इससे इनकार नहीं करते, लेकिन वे हमारे नहीं हैं जिन्हें हम अपने पास रख लें।

वे हमारे नहीं हैं, जिनके द्वारा हम अपने लिए प्रशंसा पाने की कोशिश करते हैं, बल्कि, 1 कुरिन्थियों 12:7, प्रत्येक को सामान्य भलाई के लिए आत्मा की अभिव्यक्ति दी जाती है। परमेश्वर ने हमें उपहार दिए हैं ताकि हम दूसरों की सेवा करके और चर्च की सामान्य भलाई को बढ़ावा देकर उसकी महिमा कर सकें। 14:12 के बारे में क्या ख्याल है? इसलिए, अपने आप के साथ, चूंकि आप आत्मा की अभिव्यक्तियों के लिए उत्सुक हैं, चर्च के निर्माण में उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयास करें।

हमें यही करना है, हमें दूसरों को शिक्षित करना है, हमें दूसरों का निर्माण करना है। मान्यता हमें मिल सकती है, लेकिन यह हमारा लक्ष्य नहीं है और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह मिलती है या नहीं। 1 पतरस 4, जिसे अक्सर नजरअंदाज किया जाता है, पौलुस के शब्दों के साथ अद्भुत रूप से मेल खाता है।

पवित्र आत्मा द्वारा आत्माएँ सर्वजन हिताय के लिए दी जाती हैं। पतरस कहता है, 1 पतरस 4, 10 और 11, जैसा कि प्रत्येक को एक उपहार मिला है, पतरस पौलुस से सहमत है, प्रत्येक विश्वासी के पास कम से कम एक उपहार है। इसका उपयोग परमेश्वर के विविध अनुग्रह के अच्छे प्रबन्धकों के रूप में एक दूसरे की सेवा करने के लिए करें।

बहुत सुंदर। यहाँ ईश्वर की कृपा को आध्यात्मिक उपहारों के स्रोत के रूप में देखा गया है और हमें ईश्वर से उपहार मिलते हैं और यह, उनकी कृपा विविधतापूर्ण है। यह बहुरंगी, बहुरंगी है और सभी प्रकार के उपहार उनसे आते हैं, लेकिन हमें एक दूसरे की सेवा करने के लिए जो कुछ भी हमारे पास है उसका उपयोग करना चाहिए।

1 पतरस 4:10. आम भलाई के लिए। 1 कुरिन्थियों 12:7. एक दूसरे की उन्नति के लिए।

1 कुरिन्थियों 14:12. एक दूसरे की सेवा करो। 1 पतरस 4:10.

मैं समझता हूँ, मैं समझता हूँ, मैं समझता हूँ। फिर पतरस दो उदाहरण देता है। जो कोई भी परमेश्वर की वाणी, परमेश्वर के वचनों को बोलने वाले के रूप में बोलता है, जो कोई भी परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई शक्ति से सेवा करता है ताकि हर बात में, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो।

महिमा और प्रभुता सदा सर्वदा उसी की है। आमीन। इसके लिए मैं केवल आमीन ही कह सकता हूँ।

अंत में, ओह, मुझे कहना चाहिए कि चर्च की सेवा में शिक्षा शामिल है। इसमें शिष्य बनाना और संगति शामिल है। अंत में, चर्च की सेवा में आराधना, सुसमाचार प्रचार, शिक्षा, डायकॉनल मंत्रालय और सामाजिक कार्य शामिल हैं।



गलातियों 2, 10. बहुत उल्लेखनीय है। पौलुस ऊपर जाता है और अपने सुसमाचार को उन लोगों के सामने रखता है, जो उससे पहले प्रेरित थे, स्तंभ, याकूब और यूहन्ना, पतरस, याकूब और यूहन्ना, और वे उसे स्वीकार करते हैं।

वे उसके सुसमाचार में कुछ नहीं जोड़ते। वह अपने हाथों में टोपी लेकर उनके फल की भीख नहीं मांगता। नहीं, वह बराबरी के तौर पर ऊपर जाता है, और वे साझा करते हैं, और वे एक-दूसरे को स्वीकार करते हैं।

लेकिन 2:10 उल्लेखनीय है। निश्चित रूप से, इस संदर्भ में वे जो कुछ भी कहते हैं वह बहुत महत्वपूर्ण है। यही मेरा मुद्दा है।

2:10 और 2:9. और जब याकूब और कैफा ने, जो पतरस और यूहन्ना के लिए अरामी नाम है, जो खंभे प्रतीत होते थे, यह देखा कि मुझे अन्यजातियों के पास जाने के लिए अनुग्रह दिया गया है, जैसा कि उन्हें यहूदियों के पास जाने के लिए परमेश्वर का अनुग्रह दिया गया था। उन्होंने बरनबास और मुझे संगति का दाहिना हाथ दिया कि हम अन्यजातियों के पास जाएँ जैसे वे खतना किए हुए लोगों के पास जाते हैं। इस पर ध्यान दें; उन्होंने हमसे केवल गरीबों को याद रखने के लिए कहा।

वाह! यह अविश्वसनीय है। वही काम जो मैं करने के लिए उत्सुक था।

मेरा मतलब है, यह कोई मामूली बात नहीं है। यह कोई वैकल्पिक बात नहीं है। चर्च को इसकी चिंता है और इसे अपने मंत्रालयों में से एक, मुख्य मंत्रालय के रूप में चिंता करनी चाहिए।

नहीं, मैंने शुरू से ही कहा है कि मुख्य सेवा परमेश्वर की आराधना है। परमेश्वर की सेवा में सुसमाचार प्रचार और निर्माण भी शामिल है, लेकिन सेवा का एक हिस्सा सभी मनुष्यों के लिए अच्छा करना है। गलातियों 6, विशेष रूप से विश्वास के घराने के लोगों के लिए।

गलातियों 6, 10. हम भलाई करने में थकें नहीं। इसलिए जब अवसर मिले तो हम सब के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी लोगों के साथ।

याकूब कहता है कि यह परमेश्वर और हमारे पिता की दृष्टि में शुद्ध और निष्कलंक धर्म है। यदि आप और मैं उस अंश को नहीं जानते, तो हम कहेंगे, ओह, परमेश्वर की आराधना करो, खोए हुए लोगों को जीतो, भीड़ को उपदेश दो। वह कहता है, अपने आप को संसार से निष्कलंक रखो और अनाथों और विधवाओं से भेंट करो।

अद्भुत। या फिर 1 यूहन्ना 3:16 से 18 के बारे में क्या ख्याल है। अगर आप अपने भाई को ज़रूरत में देखते हैं और आपके पास क्षमता है और आप ऐसा नहीं करते, तो मसीह का प्रेम आप में कैसे बसता है? 1 यूहन्ना 3:16 से 18।

चर्च की सेवा में डायकॉनल मंत्रालय शामिल हैं। मुझे आधार के रूप में प्रेरितों के काम 6, 1 से 7 को शामिल करना चाहिए था। और इसमें दया के सभी ईश्वर-सम्मानित मंत्रालय शामिल हैं।

मैं एमी शेरमेन की पुस्तक *रिस्टोर्स ऑफ होप* और टिम केलर की *मिनिस्ट्रीज ऑफ होप की सराहना करता हूँ/ दया*। हमने चर्च के सिद्धांत से निपटने में काफी समय बिताया है, वास्तव में इस पाठ्यक्रम का आधा हिस्सा। पाठ्यक्रम के अगले आधे भाग में, हम अपना ध्यान अंतिम चीजों के सिद्धांत पर केंद्रित करेंगे।

और मैं इसे आपके साथ साझा करने के लिए उत्सुक हूँ।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और चर्च के सिद्धांतों और अंतिम बातों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 10 है, चर्च के अध्यादेश, चर्च की सरकार, चर्च के बारे में मुख्य शिक्षाएँ और चर्च की सेवा।